आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:21-11-14

हम आत्माओं को एक मात्र, याद की यात्रा सिखलाकर, पदमापदम भाग्यशाली बनाने वाले विधाता-भाग्यविधाता बाप-दादा ने कहा, मीठे बच्चे - संगमयुग तक़दीरवान बनने का युग है, इसमें तुम जितना चाहो उतना अपने भाग्य का सितारा चमका सकते हो.

बाबा ने आज बच्चों को बार-बार यही कहा कि बाप तुम्हें और कोई तकलीफ़ नहीं देते हैं. सिर्फ कहते है अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो. याद से ही तुम्हारी आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती हैं. जब आत्मा याद से सतोप्रधान बने तब ही सतयुग के बेहद का सुख प्राप्त कर सके. अगर सतो बनेंगे तो कम सुख और रजो बनेंगे तो उससे भी कम सुख प्राप्त होगा. बाबा तो है बेहद का बाप, बेहद का सुख देने वाला. बेहद के बाप से वर्सा पाने का और कोई उपाय नहीं, सिवाय याद के. जितना बाप को याद करेंगे, याद से ऑटोमेटिकली दैवीगुण भी आयेंगे. सतोप्रधान बनना है तो दैवीगुण भी जरूर चाहिए.

हमारे में बाप की याद पक्की हो इसलिए अपनी आत्मिक स्थिति में रहकर कुछ महा-वाक्यों को पढ़ेंगे.

- बाबा कहते हैं कल्प-कल्प तुमको यही दो अक्षर समझाता हूँ - मनमनाभव और मध्याजी भव.

- बाबा कहते हैं अपने को आत्मा समझो. देह के सब धर्म भूल जाओ. तुम शुरू में देही-अभिमानी निर्बन्धन जीवन जीते थे, अभी अनेक मित्र-सम्बन्धियों के बन्धन में आये हो. अभी तुम तमोप्रधान बने हो. एक बाप की याद से ही तुम फिर से सतोप्रधान बनते हो.

- बाबा कहते हैं ब्रह्मा-बाप को फालो करो. जैसे यह बाप को याद करते हैं, पुरुषार्थ करते हैं, इनको फालो करो. ब्रह्मा बाप जैसा ऊँच पद पाना है तो बेहद के बाप को अच्छी रीति याद करो, जैसे यह फादर (ब्रह्मा-बाप) याद करते है.

- बाबा कहते हैं तुमको यहॉ बाप ज्ञान देते हैं, जिसको ज्ञान का सागर कहा जाता है. यह बात दिल में अन्दर अच्छी रीति धारण करो.

- बाबा कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों, अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो, अभी वापस घर जाना हैं.

- बाबा कहते हैं तुम आत्माये असूल में परमधाम में रहने वाली हो. फिर यहॉ आकर सुख का और दुख का पार्ट बजाया है. राम-राज्य में सुख का पार्ट और रावण-राज्य में दुख का पार्ट बजाया. अब घर चलना हैं.

- बाबा कहते हैं बाप ही सर्वशक्तिमान है, सर्व सुख देने वाला.

- बाबा कहते हैं सब आत्माये मेरे बच्चे हो. तुम आपस में भाई-भाई हो.

- बाबा कहते हैं तुम ही नम्बरवन बनते हो. ८४ का चक्र लगाकर लास्ट में आते हो फिर नम्बरवन में जाते हो तो अब बेहद के बाप को याद करना है. पुरुषोतम संगमयुग पर ही बेहद का बाप आकर २१ पीढ़ी स्वर्ग का सुख तुमको देते हैं.

- बाबा कहते हैं मैं तुम्हारा बाप, टीचर और सतगुरु हूँ. टीचर बनकर पढ़ाता हूँ फिर सतगुरु बनकर साथ ले जाता हूँ. इस पढ़ाई से ही तुम्हारी सद्गति होती हैं.

ॐ शांति.